ISBN: 978-81-974990-9-8

6. कोविड–19 का भारतीय विकास पर प्रभाव अवसर

स्मृति देशमुख

शोधार्थी,
भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.).

प्रस्तावनाः–

मनुष्य तर्कशील और बुद्धिमान होने के कारण सदैव विकास की राह पर अग्रसर रहा है। अपने प्रयासों से मानव ने हमेशा से उत्तरोत्तर विकास की नवीन ऊँचाइयों को प्राप्त किया है।

परंतु समय–समय पर आई प्राकृतिक आपदाओं जैसे – भूकंप, बाढ़, सुनामी, महामारी आदि ने भारतीय विकास के मार्ग को अवरूद्ध किया है।

कोविड–19 जो कोरोना वायरस डिसीज 2019 के लिए संक्षिप्त है इस महामारी समूचे विश्व के विकास पर गहरा आघात किया। इस महामारी के प्रकोप से भारतीय विकास भी बुरी तरह प्रभावित हुआ। विकास के सभी पक्षों आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक, वैश्विक घटकों को इस वैश्विक विपदा ने झंकझोर कर रख दिया है।

इस महामारी ने दुनिया भर के देशों को लॉकडाउन, यात्रा प्रतिबंध, सामाजिक दूरी बनाए रखने और मास्क पहनने जैसे कठोर कदम उठाने के लिए मजबूर किया। स्वास्थ्य सेवाओं पर दबाव, व्यापारिक गतिविधियों में गिरावट, बेरोजगारी और शिक्षा प्रणाली में अवरोध जैसी समस्या उत्पन्न हुई है।

कोविड–19 महामारी ने न केवल स्वास्थ्य क्षेत्र को बल्कि समाजों और व्यक्तिगत जीवन को भी प्रभावित किया है इसके प्रकोप ने मानवता को एकजूट होकर इस चुनौती का सामना करने की आवश्यकता पर बल दिया।

कोरोना महामारी के इन विपरीत प्रभावों को समझने के लिए प्रत्येक क्षेत्र पर हुए प्रभाव पर विस्तृत चर्चा आवश्यक होगी।

आर्थिक क्षेत्र पर प्रभावः–

कोविड–19 के कारण आर्थिक गतिविधियों पर सर्वाधिक विपरीत प्रभाव पड़ा है। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार इस महामारी के कारण लगभग 19 करोड़ लोगों की नौकरियों पर प्रभाव पड़ा। जिसके कारण बाजार में मुद्रा की उपलब्धता में कमी आयी।

कोविद्–19 का दौर

मुद्रा की कमी के फलस्परूप मांग में गिरावट हुई तथा मांग एवं आपुर्ति के चक्र में असंतुलन देखा गया। भारत की सकल घरेलु उत्पाद में होने वाली वृद्धि मांग में आयी गिरावट के कारण दुष्प्राभावित हुई। वित्तिय वर्ष 2016–17 में विकास की दर 6.1% थी जो कोविड–19 के कारण 2020–21 की दूसरी तिमाही में यह–7.5% रह गई।

अर्थव्यवस्था में आई इस गंभीर मंदी से निपटने के लिए भारत सरकार ने विभिन्न प्रयास किये। वित्त मुत्रालय द्वारा कुल 1.7 लाख करोड़ रूपय का पैकेज जारी किया गया जिसके अंतर्गत आत्मनिर्भर भारत एवं निर्यात जैसे पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित विकास को पुनः गति देने का प्रयास किया गया। इन प्रयासों के परिणाम सकारात्मक रूप से देखने को मिले जिसके कारण 2022-23 में आर्थिक विकास दर 7% रही।

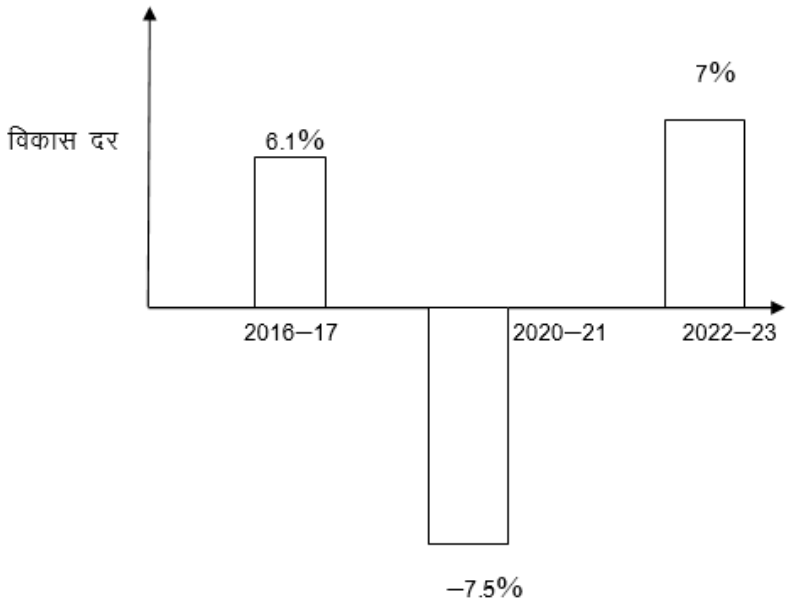

स्वास्थ्य सेवाओं पर प्रभावः–कोविड–19 महामारी ने स्वास्थ्य के क्षेत्र पर कई गरि और जटिल प्रभाव डाले हैं। यहां कुछ प्रमुख प्रभावों का वर्णन किया गया है –

स्वास्थ्य सेवाओं पर दबावः–

- **अस्पतालों में भीड़ः–**कोविड–19 में मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही थी जिसके कारण अस्पतालों में बिस्तरों की कमी, ऑक्सीजन सिलेण्डर की कमी का सामना करना पड़ा।
- **स्वास्थ्य कर्मियों पर दबावः–**डॉक्टर, नर्स और अन्य स्वास्थ्यकर्मी अत्यधिक दबाव में काम कर रहे थे। जिससे उनकी शारीरिक और मानसिक थकावट बढ़ गई।

स्वास्थ्य संसाधनों की कमीः–

- **मेडिकल सप्लाई की कमीः–** मरीजों की अधिकता के कारण पी.पी.ई. किट्स, मॉस्क, ऑक्सीजन सिलेण्डर और दवाओं की कमी का सामना करना पड़ा।
- **वेंटिलेटर और आई.सी.यु. बैड की कमीः–** गंभीर मरीजों के इलाज के लिए जरूरी वेंटिलेटर और आई.सी.यु. बैड की भारी कमी हो गई। जिसकी वजह से काफी लोगों की जान भी चली गई।

नियमित स्वास्थ्य सेवाओं में व्यवधान :–

- **रूटीन चैक–अप और सर्जरी में देरीः–**गैर आपातकालीन सेवाओं को स्थगित करना पड़ा। जिससे अन्य बीमारियों के मरीजों को समय पर इलाज नहीं मिल पाया।
- **टीकाकरण कार्यक्रमः–**बच्चों और अन्य सेवदनशील समूहों के लिए टीकाकरण कार्यक्रमों में भी रूकावट आई।

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभावः–

- **चिंता और अवसादः–**महामारी के डर, अनिश्चितता और सामाजिक अलगाव के कारण मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में वृद्धि हुई।
- **मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की मांगः–**समय–समय पर मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की मांग में वृद्धि हुई आम जनता अपने आप को मानसिक रूप से स्वस्थ्य रखने के लिए योगा, मेडिटेशन आदि का सहारा लेने लगी।

अेलीमेडिसिन का उदयः–

- **ऑनलाइन स्वास्थ्य सेवाएँः–**अस्पताल जाने की जोखिम को कम करने के लिए टेलीमेडिसन का उपयोग बढ़ा जिससे मरीजों को ऑनलाइन परामर्श मिल सका। इस कारण से घर पर रह कर भी मरीजों का इलाज सभंव हुआ।
- **डिजीटल हेल्थः–** डिजीटल हेल्थ ऐप्स और प्लेटफार्मों का उपयोग बढ़ जो भविष्य में भी जारी रह सकता है।

वैक्सीन विकास और वितरण पर प्रभावः–

- **त्वरित वैक्सीन विकासः–**महामारी के दौरान विभिन्न वैक्सीन्स का तेजी से विकास हुआ जिसे आम जनता तक पहुंचाने का काम भी किया गया परंतु इस वैक्सीन वितरण के कार्यक्रमों में बहुत से चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

- **वैक्सीनेशन अभियानः–**बड़े पैमाने पर वैक्सीनेशन अभियान चलाए गए। लेकिन इसमें भी कई चुनौतियाँ सामने आई जैसे कि कुछ–कुछ जगहों पर लोगों को वैक्सीन के फायदे को बताना ही कठिन हो गया।

संक्रमण नियंत्रण पर प्रभावः–

- **सामाजिक दूरी और मास्क पहननाः–**संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए व्यापक रूप से सामाजिक दूरी, मास्क पहनना और सैनिटाइजेशन को अपनाया गया।
- **लॉकडाउन और प्रतिबंधः–**संक्रमण की श्रृंखला को तोड़ने के लिए लॉकडाउन और यात्रा प्रतिबंध लागू किए गए। जिससे कि इस महामारी को थोड़ा कम किया गया और स्वास्थ्य सेवाओं को समय मिला।

कोविड–19 महामारी ने स्वास्थ्य क्षेत्र में कई कमियों को उजागर किया और सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया। इसके साथ ही इसने स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक लचीला और तैयार बनाने की दिशा में कई नवाचारों और सुधारों को भी प्रेरित किया।

शैक्षिणिक क्षेत्र पर प्रभावः–

कोविड–19 एक संक्रामक बीमारी है, अतः इसके प्रसार को रोकने के लिए सरकार ने विभिन्न प्रतिबंध लागू किए। सामाजिक दूरी बनाए रखने की बाध्यता एवं सामूहिक एकत्रण पर आरोपित प्रतिबंध के फलस्वरूप शिक्षा एवं कक्षाओं की निरंतरता को बनाए रखना चुनौतीपूर्ण साबित हुआ इसके साथ ही यात्राओं एवं सार्वजनिक परिवहन सुविधाओं पर प्रतिबंध के कारण शालाओं एवं महाविद्यालयों तक पहुचने में समस्या उत्पन्न हुई।

- **ऑनलाइन शिद्वाा का प्रसारः–**भारत में ई–शिक्षा या ऑनलाइन शिक्षा के प्रांसगीक होने के लिए अनेक समस्याएँ विद्यमान है। इसके लिए आवश्यक सूचना प्रौद्योगिकी उपकरण जैसे–मोबाईल, टैबलेट, कम्प्यूटर, स्मार्ट बोर्ड आदि की पहुँच सभी व्यक्तियों तक नहीं है। सुदुर एवं दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों में इंटरनेट जैसी सुविधाओं का आभाव है। ऑनलाइन माध्यम से शिक्षण कार्य हेतु सूचना प्रौद्योगिकी से परिचित एवं प्रशिक्षण शिक्षकों की आवश्यकता होती है, भारत में ऐसे शिक्षकों की कमी थी। भारत सरकार ने इस काय्र को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रयास किये हैं। प्रत्येक जिले में स्थापित किये राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी केन्द्र (NIC) नेशनल परियोजना इंटरनेट डिजीटल लिटरेसी मिशन डिजीटल शिक्षा की दिशा में उठाये गए उल्लेखनीय कदम में भारत नेट परियोजना इंटरनेट के प्रसार हेतु आरंभ की गई जिसके द्वारा 2.5 लाख ग्राम पंचायतों तक ब्राडबैंड कनेक्टिविटी पहुंचायी जायेगी।

- ❖ **परीक्षाओं और मूल्यांकन में परिवर्तनः–** कई परिक्षाएँ रद्द कर दी गई या स्थगित कर दी गई। कुछ जगहों पर ऑनलाइन परीक्षाओं का आयोजन किया गया जिससे मूल्यांकन प्रणाली में बदलाव आया।
- ❖ **मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभावः–** छात्रों और शिक्षकों दोनों के मानसिक स्वास्थ्य वर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। लंबे समय तक घर पर रहने और सामाजिक संपर्क की कमी ने तनाव और चिंता को बढ़ाया।
- ❖ **सीखने की गुणवत्ता पर प्रभावः–** ऑनलाइन शिक्षा के बावजूद, कई छात्रों को सीखने की गुणवत्ता में कमी का सामना करना पड़ा। कक्षा में मिलने वाले व्यक्तिगत ध्यान और मार्गदर्शन की कमी महसूस की गई।
- ❖ **शैक्षणिक नीतियों में प्रभावः–** महामारी के प्रभाव को देखते हुए सरकारों और शैक्षणिक संस्थानों ने नई नीतियां और उपाय अपनाए, जैसे कि हाइब्रिड लर्निंग ममॉडल, लर्निंग गैप्स को पाटने के लिए रियेडियल क्लासेस आदि।

सामाजिक क्षेत्र पर प्रभावः–

कोविड–19 महामारी से बचने के लिए बनाई गई सामाजिक दूरियों ने न केवल मित्रों रिश्तेदारों और पड़ोसियों को दूर कर दिया बल्कि माता–पिता और पुत्र–पुत्रियों तथा भाई–बहनों के बीच भी अलगाव की दीवार खड़ी कर दी। मानव की प्रकृति बीमारों के नजदीक आने पर दया प्रकट करने की रही है। परंतु कोरोना वायरस ने इंसानों की इस अच्छी प्रकृति पर भी हमला कर दिया है। कोरोना के मरीजों का कुशल क्षेत्र जानने के लिए मरीज के लिए निकट जाना तो दूर उसकी मृत्यु हो जाने पर शव के निकट जाना भी प्रतिबंधित रहा। विभिन्न सामाजिक व मांगलिक कार्यक्रमों में लोगों को उपस्थिति अत्यंत सीमित कर दी गयी। त्यौहारों आदि पर होन वाले सामाजिक मिलन प्रतिबंधित रहे। इन सभी कारणों से समाज में दूरियां बढ़ी है।

अकेले रहने के कारण व्यक्तियों में एकाकीपन, चिड़चिड़ापन, अवसाद जैसे मानसिक विकार उत्पन्न हुए। महामारी के समाप्ति के उपरांत भी इस समस्या से पूरी तरह छुटकारा नहीं पाया जा सकता है।

भारत के निर्धन एवं मजदूर वर्ग ने पलायन जैसी विपदा का सामना किया। निर्माण और औद्योगिक श्रमिक सैंकड़ों किलोमीटर दूर पैदल चलकर अपने गांव जाने को विवश हुए। इससे उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ा।

सरकार ने इस सामाजिक खाई को पाटने के लिए विभिन्न प्रयास किए जिसमें टेलीविजन पर पूराने धार्मिक धारावाहिकों का प्रसारण किया गया जैसे – रामायण, महाभारत, कृष्णा इत्यादि ताकि भारतवासी इन धारावाहिकों को देखकर अपने खाली समय का प्रयोग कर रहे थे। घर पर रह कर ही योगा, मेडिटेशन इत्यादि को भी ज्यादा से ज्यादा अपनाया गया।

वैश्विक संबंधों पर प्रभावः–

वैश्वीकरएर एवं उदारीकरण के इस दौर में राष्ट्रों का विकास एक दूसरे से पृथक न होकर अर्तसंबधित है। भारत आवश्यकतानुसार विभिन्न वस्तुओं का आयात चीन, अमेरिका, रूस एवं अन्य खाड़ी देशों से करता है। इसके साथ ही विदेशी मुद्रा की उपलब्धता को बनाए रखने के लिए भारत द्वारा वस्तुओं एवं कच्चे मालों का निर्यात किया जाता है। कोरोना महामारी के कारण देशों के मध्य होने वाले वायु एवंज ल परिवहन को रोक दिया गया जिसके कारण आयात – निर्यात् प्रभावित हुआ।

भारत के प्रमुख आयातक देश चीन एवं अमेरिका है। कोरोना वायरस की उत्पत्ति चीन के वुहान में होने के कारण चीन से होने वाली सभी आर्थिक गतिविधियों को प्रतिबंधित किया गया। इसी प्रकार अमेरिका व खाड़ी देशों से आने वाले कच्चे तेल के मूल्य में गिरावट देखी गई। इन सभी के फलस्वरूप वैश्विक संबंधों के स्वरूप में परिवर्त्तन हुआ।

भारत सरकार ने इस 'आपदा को अवसर' में बदलने का निर्णय किया। स्वदेशी वैक्सीन के निमार्ण एवं इसके आफ्रीकी देशों में निर्यात के कारण भारत की स्थिति मजबूत हुई एवं भारत वैश्विक शक्ति के नए केन्द्र के रूप में उभरा। अनेक पश्चिमी देशों में चीन की अपेक्षा भारत में निवेश पर दिलचस्पी दिखाई। दवाईयों एवं उपकरणों की आवश्यकता के कारण भारत सरकार द्वारा भारत में इनके निर्माण एवं निर्यात के लिए नीति तैयार की गई है।

उपसंहारः–

महामारी के दौर में जहां अनेकों चुनौतियां आयी। वहीं इन चुनौतियों के समाधान के प्रभाव ने भारत व भारतीयों को नए अवसर प्रदान किये हैं।

आयात–निर्यात के प्रतिबंधों के कारण **"आत्मनिर्भर भारत"** की संकल्पना ने जन्म लिया है जिसके अनुसार भारत अपनी सभी आवश्यक वस्तुओं का उत्पादक स्वयं होगा। इस संकल्पना के अनुसार हम अपनी जरूरतों के लिए किसी अन्य देश पर निर्भर नहीं होंगे इसके साथ ही अतिरेक उत्पादन कर निर्यात को बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा। जिसमें न केवल भारत की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा अपितु विश्व पटल पर भारत महाशक्ति बनकर उभरेगा।